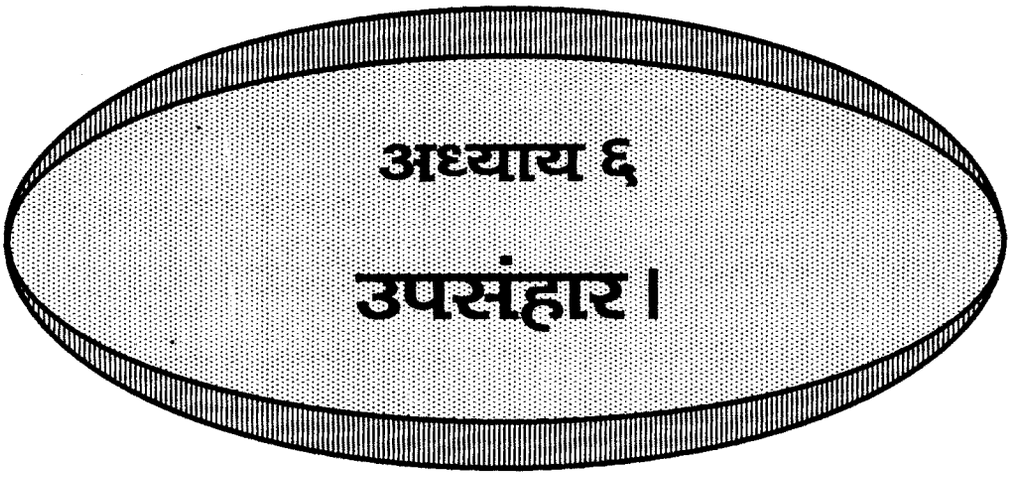
अध्याय ६
उपसंहार।

छटा अध्याय

उपसंहार

हिन्दी साहित्य में एक उपन्यासकार के रूप में रामदरश मिश्र का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। रामदरश मिश्र हिन्दी उपन्यास साहित्य के एक शक्तिशाली, प्रतिभासंपन्न व्यक्ति रहे हैं। आपके व्यक्तित्व का प्रभाव आपेक साहित्य पर पडा है। एक लेखक के रूप में रामदरश मिश्र का व्यक्तित्व अनेक लेखन प्रकारों में उभरकर आया है। रामदरश मिश्र एक सफल कवि, कथाकार, आलोचक के रूप में प्रसिध्द रहे हैं। परंतु एक सफल उपन्यासकार के रूप में आपकी ख्याति अधिक रही है।

रामदरश मिश्र हिन्दी के वरिष्ठ कवि कथाकार और आलोचक है। गुणवत्ता और वैविध्य दोनों दृष्टियों से स्वातंत्र्योत्तर रचनाकारों में आपकी विशिष्ट पहचान है। रामदरश मिश्र ने आँचलिक उपन्यासकार के रूप में अपनी पहचान बनाई है। आपने आपके जीवन में आये हुए अनुभवों पर गाँव का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। आप गाँवों का जीवन नजदीकी से देखते रहने से, आप सामान्य जनता के दु:ख दर्द से परिचित हैं।

रामदरश मिश्रजी ने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रतापूर्ण और स्वातंत्र्योत्तर समाज जीवन का चित्रण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पहले गावों की स्थिति अच्छी नहीं थी। समाज में अने कुप्रथायें मौजूद थी। समाज में जाति व्यवस्था, अज्ञान, दारिद्र्य इसके विरोध में लोग खडे हो रहे थे। उच्चवर्गीयों का विरोध करने लगे थे। समाज में शिक्षा की समस्या, नारी समस्या, शोषण, अन्याय, अत्याचार, जनसंख्या, अस्पृश्यता आदि समस्याएँ मौजूद थीं। लोग इसके विरोध में खडे हो रहे थे। आजादी के पूर्व उच्चवर्गिय लोग सामान्य जनता का शोषण करते थे। किसान लोगों को अपने बच्चों की पढाई पूरी करने के लिए खेत रहेन रखने पडते थे। आजादी मिलने के बाद भी सामान्य जनता का

वही हाल रहा है। आजादी के पूर्व सामान्य जनता शोषकों का विरोध नहीं करती थी। लेकिन आजादी के बाद सामान्य लोग अपने अधिकार के लिए आवाज उठाने लगे।

'पानी के प्राचीर' और 'जल टूटता हुआ' में गाँव के यथार्थ का चित्रण हुआ है। आपने अपने जीवन में आये हुअे अनुभव पर गाँव का यथार्थ चित्र उपन्यास में प्रस्तुत किया है। आपने गाँव का जीवन नजदीक से देखते रहनेसे सामान्य जनता के दु:ख दर्द से परिचित है। उपन्यास के पात्र गाँव से टूट जाने के बाद भी गहरे रूप से गाँव से जुडे होते हैं। गौंववालों में रूढिवादिता से मुक्त होने की छटपटाहट है। शहर में रहकर भी गाँव की स्मृतियाँ बार बार उभरती रहती हैं। आपके उपन्यास में गाँव की अत्याधिक क्रूर और अमानवीय स्थितियों की, पीडाजनक यादें हैं। इतना होने पर भी गाँव की मिठास या कटुता के अनुभव बने रहते हैं। मिश्रजी की रचनाशीलता और उनके विवेक की जड अनुभवों पर आधारित है। आपका पहला उपन्यास इ.स.1961 में प्रकाशित है जो अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। इस उपन्यास में गांधीवाद से प्रभावित नायक नीरू अन्याय अत्याचार का पूरी शक्ति के साथ विरोध करता है। 'पानी के प्राचीर' आंचलिक उपन्यास होने के कारण संपूर्ण उपन्यास में ग्रामांचल का चित्र मिलता है। खेत-खलिहान का वातावरण है। सारा गाँव दरिद्री है। खेत-खलिहान रेहन रखकर बच्चों की शादी, पढाई चलती है। अकाल के कारण सारा गाँव बधुआ के साग पर जीता हैं। वस्त्र हीन गरीब लोग ठंडी में अपनी रातें बिताते हैं। बाढ, प्लेग, अकाल के कारण लोगों के बिखरते जीवन का चित्रण मिलता है।

स्वतंत्रता पूर्व की शोषक प्रतिगामी शक्तियों को कथाकार ने बहुत स्पष्टता के साथ चित्रांकित किया है। उपन्यास में यह चित्रित हुआ है कि सामान्य जनता, बेकारी, बाढ, प्लेग, अकाल, जमींदार के अत्याचार आदि समस्याओं को किस तरह सहती रही है। पूर्वांचल के सर्वाधिक पिछडे हुए पांडेपुरवा गाँव के लोगों की समस्याओं का चित्रण है। इसे भी दिखाया है कि गरीबी मे पला नीरू अन्याय-अत्याचार का विरोध करता है और बाद में वह भी किस तरह गरीब किसानों पर अत्याचार करता है।

रामदरश मिश्रजी ने स्वातंत्र्य प्राप्ति के बाद 'जल टूटता हुआ' की निर्मिति की। 'पानी के प्राचीर' का पांडेपुरवा ही तिवारीपुर बनकर आया है। नदियों का वही कछार, बाढ का आतंककारी रूप, सामाजिक रूढियाँ, अस्तित्व के लिए संघर्ष है लेकिन दोनों उपन्यास पूर्ण रूप से अलग हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारतीय जीवन में व्यापक रूप से ऱ्हास और गिरावट का दौर आता है। जल टूटता हुआ में ऐसा लगता है कि सरकार के सारे विकास प्रयत्नों के बाद भी गाँवों का विकास नहीं हो पाता है। सामान्य जनता पर अन्याय, अत्याचार होते ही रहते हैं। इस उपन्यास में सामान्य जनता की व्यथा का चित्रण मिलता है। जमींदारों के अत्याचार और गरीबी के कारण सारा गाँव के टूटने का चित्रण किया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सामान्य जनता में सुख के सपने उभर आते हैं, लेकिन सामान्य जनता के सपने पूरे नहीं होते। पंचायती सरकार, सरपंची, आदर्शवाद, न्यायिक मूल्य, आस्था से लोकजीवन मुक्त नहीं होता। भ्रष्ट राजनीति के कारण सब कुछ नष्ट हो जाता है।

'जल टूटता हुआ' में जनता का विद्रोह प्रकट हुआ है। समाज में ऐसी अनेक समस्याएँ मौजूद थी। आजादी के बाद नयी सरकाने उसे छुआ भी नहीं। समाज में आजादी के बाद भी अनेक समस्याएँ - गरीबी की समस्या, अनाज की समस्या, अकाल की समस्या, बेरोजगारी, भूख, जाँति-पाँति की समस्या, धार्मिकता, अंधविश्वास, रूढियाँ रही जिन पर कोई विचार नहीं किया गया। आजादी के बाद भी उच्चवर्गीय निम्न वर्गीयों का शोषण करते रहो, सामान्य जनता आजादी के बाद भी उच्च वर्गियों के जुल्म सहती रही, बिमारी में इलाज के अभाव के कारण लोग मर जाते थे। शहर तक पहुँचने के लिए सडकों की असुविधा के कारण सवारी नहीं मिलती थी। आजादी के बाद भी नयी सरकार के प्रयत्नों के बावजूद सामान्य जनता को सभी समस्याओं का सामना करना पडता है।

'जल टूटता हुआ' गरीबी में पीसते हुए, अभावों में जीते गॉव की कहानी हैं। गॉवों में जमींदारीं नहीं रहती, लेकिन किसी न किसी रूप में उसका बोलबाला बना रहता है। महीपसिंह जमींदारी का ढहता हुआ स्तंभ है, फिर भी प्रभावशाली लगता है। आजादी के बाद जमींदार लोग नेता बनकर जनता का शोषण करते रहे हैं। 'जल टूटता हुआ' में व्यवस्था के अमानवीयकरण की

प्रक्रिया, अर्थशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय सन्दर्भ तथा उससे जन्म लेने वाली पीडा और घुटन का उसके विरूध्द संघर्ष करने वाली ताकतों की पहचान का चित्रण है। उपन्यास में सतीश सामाजिक अन्याय, शोषण, दमन और अत्याचारों का विरोध करता है। सामंती शक्ति जो मरकर भी अपनी जगह से हटने का नाम नहीं लेती।

रामदरश मिश्रजी को गाँव की मिट्टी से गहरा प्रेम है। आपको नदी, तालाबों, खेत-खलिहान, बाग-बगीचों, त्यौहारों आदि के प्रति गहरा आकर्षण है। इन सबके प्रति लगाव होने का एक मात्र कारण मिश्रजी उन मनुष्यों के प्रति जुडे हैं, जिन्हें प्रकृति और व्यवस्था से संघर्ष करना पड रहा है। मिश्रजी के दोनों उपन्यास आंचलिक है। मिश्रजी मानते हैं संपत्ति का संचय ही शोषण का कारण है। संपत्ति के अभाव में ही गरीबी जन्म लेती हैं, वर्ण व्यवस्था के मूल में भी संपत्ति होती है।

'जल टूटता हुआ' में आजादी के बाद भी सामान्य जनता का शोषण होता ही रहता है। लेकिन जनता शोषण का विरोध करती है। सरकार भी गावों के विकास के लिए योजनाएँ बनाती है। लेकिन सभी योजनाएँ विफल बनती है। जनता के दु:ख दर्द वही रहते हैं जो जनता के होते हैं।

'पानी के प्राचीर' और 'जल टूटता हुआ' में भारतीय समाज के स्वतंत्रता पूर्व से लेकर आज तक के भारतीय जीवन के बदलाव को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। इन उपन्यासों में पूर्वी उत्तर प्रदेश के अंचलों की विशेषताओं को चित्रित किया है।

आंचलिक उपन्यास होने के कारण कथानक में बिखराव है। 'जल टूटता हुआ' में कथागत बिखराव और 'पानी के प्राचीर' में चरित्रगत बिखराव देखने मिलता है। 'जल टूटता हुआ' में तिवारीपुर गाँव की धरती बैचेनी, बेबसी, उसकी सुंदरता, असुंदरता का जीवंत चित्र खिंचा है। मास्टर सुग्गन, महीपसिंह, सतीश, रामकुमार, जगपतिया, कुंजू, बिरजू, रामधनिया, गुरूदीन, दीनदयाल, दौलतराय आदि से संबंधित अनेक घटनायें पाठकों के सामने तिवारी पुरा का विशाल चित्र खडा करती हैं।

परिवेश के अंतर्गत राप्ती, गोर्रा जैसी नदियों, नालों का चित्रण है। ग्रामीण जीवन से उसका प्रारंभ होता है। 'पानी के प्राचीर' से घिरा आंचल, अटूट जडता, अन्धविश्वास रूढियों की दीवारें और गुलामी की दीवारें हैं। लेकिन इन सब को पात्रों की जिजिविषा अवश्य तोड देती है। इसके साथ ही उपन्यास का चित्र पूरा होता है।

सामान्य जनता की आशाएँ पूरी नहीं होती, जिसे 'जल टूटता हुआ' में दिखाया है। भ्रष्ट राजनीति के कारण सामान्य जनता का वही हाल रहता है जो आजादी के पूर्व था। आजादी के पंद्रह साल गाँव के लोग भी गाँव का सब कुछ भूलकर शहरी हो जाते हैं, जो 'जल टूटता हुआ' की कथा है।

उपन्यास की भाषा देहाती और शहरी जीवन को यथार्थ रूप देती है। आंचलिक जीवन के रीतिरिवाजों, उत्सवों, भाषा-मुहावरों, सामाजिक-पारिवारिक संबंधों और आजादी के बाद आये परिवर्तनों को स्पष्ट रूप से प्रकट करती हैं। उपन्यास में कथात्मक, वर्णनात्मक और विवरणात्मकता के कारण शब्दावली का प्रयोग सार्थक हुआ है।

उपन्यासों में कहावतो - मुहावरों का प्रयोग भी आंचलिकता को लिए हुए है।

प्रथम अध्याय में रामदरश मिश्रजी का व्यक्तित्व कृतित्व पर विचार किया गया है।

दूसरे अध्याय में स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक जीवन पर विचार किया गया है। स्वातंत्र्यपूर्व सामान्य जनता की समस्या और स्वातंत्र्योत्तर सामाजिक समस्या पर प्रकाश डाला है।

तीसरे अध्याय में 'पानी के प्राचीर' का कथानक और 'पानी के प्राचीर' में आयी समस्याओं को चित्रित किया है।

चतुर्थ अध्याय में 'जल टूटता हुआ' का कथानक और उसमें आयी समस्याओं को चित्रित किया है।

पाँचवे अध्याय में आलोच्य उपन्यासों के शिल्प पर विचार किया गया है।

रामदरश मिश्रजी ने देहात तथा शहर को, महानगरों की समस्याओं, संघर्षो के धरातल पर चित्रित किया है। आज भी अंचल, देहाती शहर अथक गरीबी में पीस रहे हैं। स्वातंत्र्यपूर्व और स्वातंत्र्योत्तर जीवन की समस्यायें वे ही रही हैं। भारतीय जनजीवन में आये परिवर्तनों को स्पष्ट किया है।

इन दो उपन्यासों का अध्ययन करने पर दिखायी देता है कि स्वतंत्रतापूर्व काल तथा स्वातंत्र्योत्तर काल के भारतीय देहाती जीवन में कोई अंतर नहीं आया है। स्वातंत्र्यपूर्व काल में शोषण और रूप से होता रहा , स्वातंत्र्योत्तर काल में और रूप से होता रहा है। शोषण का तरीका बदला पर जनता स्वातंत्र्य से सुख का चैन नहीं पा सकी। उसका वही हाल रहा है। इसके लिए हमारी जीवन की सामाजिक समस्यायें कारण रही हैं। जब तक इन समस्यों की तहतक हम नहीं पहुँच पाते, उनपर इलाज नहीं करते तब तक हमारे गाँव ऐसे ही रहेंगे। छुट पुट प्रयत्न होते हैं पर पूरे समाज के परिवर्तन के लिए काफी नहीं हैं। मिश्रजी ने इसी ओर इन उपन्यासों के जरीये संकेत किया है। प्रेमचंदजी ने देहातों को जैसे साकार किया था, मिश्रजी ने वहाँ के लोकजीवन को साकार किया है। इसमें किसी एक व्यक्ति की कथा, व्यथा न होकर उस परिवेश से जुडे सभी लोगों की व्यथा व्यक्त की है। इसे समस्याओं से आज भी देहात झुझ रहा है। इसीलिए ये उपन्यास आज भी सार्थक लगते है। इनका अध्ययन आज के संदर्भ में आवश्यक लगता है।